समाजवादी समाज की स्थापना में दलित समुदाय का महत्व :– एक विवेचना

डॉ0 प्रमोद कुमार*

समाजिक सक्षमता के बिना किसी राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। एक राष्ट्र के रूप में खुद को ढालने के लिए हमें जिस सामाजिक सक्षमता की जरूरत थी,वह दलित वर्गो के सहयोग के बिना कत्तई हासिल नहीं की जा सकती। उन्हें आगे आ कर सामाजिक सोपान मे अपना समुचित स्थान ग्रहण करना होगा। तभी हम पुरी सच्चाई के साथ खुद को एक राष्ट्र कह सकेंगे। परन्तु इसका अर्थ यह कत्तई नहीं निर्धारित किया जाना चाहिए की बहुसंख्य समाज को हासिये पर डाल दिया जाए। यदि किसी देश का बहुसंख्य समाज दलित हो जाए तो वह देश हीं दलित हो जाएगा। प्रजातंत्र की यह सीधी मांग है कि किसी देश या क्षेत्र का बहुसंख्य समाज सिर उठा कर चलने की स्वतंत्रता रखे। ब्रिटिश कालिन शासकों नें तो अल्पसंख्यकों की सहायता हीं इस शर्त पर की थी कि विदेशी शासन बहुसंख्यको पर अपना प्रभुत्व कायम रख सके। यही इस महान देश के लिए एक भारी अभिश्राप है। जो कोई भी इस नीति का समर्थक या पोषक है,वह प्रजातंत्र का शत्रु है। सच था कि दलित समाज के मुख्य धारा में थे लेकिन वे सब में सम्मिलित नहीं थे एवं जो चीज काफी महत्त्व रखती थी और जिसे प्रमुखता से सामने लाने की जरूरत थी, वह यह की हमारी राष्ट्रीय परंपरा, राष्ट्रीय इतिहास और राष्ट्रीय शास्त्र भी हमारे पक्ष में थे। स्वामी दयानन्द ने यह प्रमाणित किया है। लाला जी जितना आर्य समाज के दर्शन से प्रभावित थे, उतना शहीदे आजम भगत सिंह नहीं थे। सच तो यह है कि शहीदे आजम भगत सिंह धर्म से बहुत ऊपर थे। उनका मानना था कि गरीबी के बीच धर्म एक ऐसा पचड़ा है जिससे मनुष्य भाग्यवादी बन जाते हैं, जबकी मनुष्य को कर्मवादी बनना चाहिए।

लला जी और शहीदे आजम भगत सिंह दलितों की स्थिति समान्य जन जैसा करने के अवश्य पक्षपाती थे किन्तु इस क्षेत्र में भी लाला जी भगत सिंह से

***पूर्व शोध छात्र, इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आराब्ध श्री पंकज कुमार, चाणक्यपुरी कॉलोनी, डुमरॉव, बक्सर, (बिहार)**

एक पग आगे थे। लाला जी स्पृश्यता के पक्षधर थे जिससे छूआछूत की भावना का अंत हो सके। वे चाहते थे कि अस्पृश्यों को अपने जमात में मिलाकर ले चलना चाहिए और यही विचार शहीदे आजम भगत सिंह का भी था। लाला जी ने शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रशंसनीय और व्यापक कार्य किये थे। उन्होंने दयानन्द वैदिक कॉलेज की स्थापना में अपने रक्त को पानी तो बनाया हीं था, आर्यसमाज की ओर से बालक और बालिकाओं के लिए जगह–जगह पाठशालाएँ भी स्थापित की थी। वे उन पाठशालाओं के चलाने और प्रबंधन में अपना समय और परिश्रम लगाते हीं थे, अपने पास से धन भी खर्च किया करते थे। वे उनके द्वारा नीति,धर्म और देशप्रेम का प्रचार भी करते थे। उनका प्रयत्न था कि बालक और बालिकाओं को ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे ये वीर,साहसी और देशप्रेमी बन सकें। लाला जी कई वर्षो तक लुधियाना के एंग्लो संस्कृत कॉलेज में भी मंत्री रहे। उन्होंने वहाँ पर गरीबों को पढाने का विशेष प्रबंध किया था। कॉलेज में छात्रावास का प्रबंध किया गया था। छात्राओं के लिए अलग से छात्रावास बनाये गये थे। इस तरह से लाला जी ने सारे पंजाब में शिक्षा के स्वरूप को हीं बदल दिया था। पंजाब में जो सामाजिक और राजनीतिक क्रांति हुई थी,उसे यदि लाला जी की शिक्षा प्रचार का हीं फल कहा जाए तो आश्चर्य नहीं मानना चाहिए। उनके प्रयत्नों से समस्त भारत में समाजवादी भावना का विकास हुआ। लालाजी ने शिक्षा संबंधी जो कार्य किये,उनका प्रभाव अंग्रेजी सरकार के उपर भी पड़ा। सरकार की ओर से उनके कार्यो की भूरी–भूरी प्रशंसा की गई। 1902 ई0 में लार्ड कर्जन ने शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए कमेटी बनाई थी। लालाजी को भी उस कमेटी में गवाही देने के लिए आदरपूर्वक निमंत्रित किया गया था। शायद लालाजी पहले गैर–सरकारी आदमी थे,जिन्हें यह आदर प्रदान किया गया था। लालाजी के त्याग और इस शिक्षाप्रेम की कौन प्रशंसा नहीं करेगा? भारत के इतिहास में उनके समान और दुसरा कोई महान पुरूष नहीं मिलेगाा,जिसने शिक्षा के प्रचार में अपना अमूल्य समय तो लगाया हीं हो, अपनी गाढ़ी कमाई का पचास हजार रूपया भी खर्च किया हो।

सचमुच सच्चा मनुष्य वही है जो मनुष्य धर्म का पालन करता है।मनुष्य का धर्म है मानवता, पर मानवता क्या है? मानवता है, दुसरों के लिए जीवित रहना और दुसरों के लिए हीं मृत्यु की गोद में सो जाना। राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने अपनी एक कविता में लिखा है– सच्चा मनुष्य वही है,जो मनुष्य के कल्याण के लिए जीवित रहता है और उसी के कल्याण के लिए मष्त्यु की गोद में सो जाता है।सच्चे मनुष्य को अपनी नहीं,सदा दुसरों की चिंता रहती है। महर्षि दधीचि सच्चे मानव थे। उन्होंने देवताओं के कल्याण के लिए अपने शरीर की अस्थियों का भी दान कर दिया था।

लाला लाजपत राय भी सच्चे मानव थे । वे दुसरों के लिए जीवित रहे और दुसरों के लिए हीं मृत्यु की गोद में सो गये। अपने लिए कुछ नहीं किया। वकालत के पेशे में प्रचुर मात्रा में धन उपार्जित किया परन्तु उस धन को बिना किसी मोह के लोक कल्याण के कार्यो में खर्च कर दिया। वे अपने पश्चात् अपनी संतानों के लिए कुछ भी नहीं छोड़ पाये। ठीक हीं लिखा गया है– लालाजी शिवाजी के प्रतिरूप थे। जैसे शिवाजी अपने पास कुछ भी न रख कर दुसरों को सब कुछ दे दिया करते थे, उसी प्रकार लालाजी भी अपने पास कुछ भी न रख कर दुसरों को सब कुछ दे डालते थे। जो पूँजी का संचय करे वह पूँजीपति है और जो पूँजी का संचय न करे वह समाजवादी है। लालाजी और शहीदे आजम भगत सिंह ने पूँजी का कभी संचय नहीं किया। अतः दोनो पक्के समाजवादी थे। भगत सिंह का यह निश्चित विचार था कि देश तभी मजबुत हो सकता है जब वहाँ के नवयुवकों में देशभक्ति की भावना का सही रूप से विकास हो। हमें यह याद रखना चाहिए की राष्ट्रीय आन्दोलन के समय यह भावना अपनी ऊँचाईयों पर थी। भगत सिंह के राजनीतिक विचार समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित थे। नौजवान भारत सभा के प्रमुख दो उदेश्यों में उनके इन विचारों का पहली बार परिचय मिलता है। किसानों एवं मजदुरों तथा संपूर्ण स्वतंत्र गणराज्य की प्राप्ति के पास ले जानेवाले आंदोलनों को समर्थन देना, श्रमिकों तथा कृषकों को संगठित करना।

शहीदे आजम भगत सिंह सिर्फ 23 वर्ष हीं जीवित रहे, किन्तु इसी 23 वर्ष के अन्तराल में मानवता की भलाई के लिए उन्होंने जो कुछ भी किया इससे वे इतिहास में चमकते सितारे की भांति सदा जगमगााते रहेंगे। भगत सिंह काम करने में विश्वास करते थे नेतागीरी करने मे नहीं। देश का कल्याण इसी में है कि वहाँ के राजनीतिक व्यक्ति अपने को नेता न समझकर जनता का सेवक, एक कार्यकर्त्ता अथवा जनसेवक समझे। भारत में समाजवाद की स्थापना के उद्देश्य से क्रांतिकारियों ने भारत समाजवादी गणतंत्र की स्थापना की थी। किन्तु आज हमारे राजनीतिक दल की स्थिति इससे एकदम विपरीत है, इनमें अनुशासन जैसी कोई चीज नहीं है। हाँ, चाटुकारिता एवं व्यक्तिपूजा को तो अनुशासन कहा नहीं जा सकता। इन दलों का कोई भी सदस्य कार्यकर्त्ता बनकर नहीं रहता, सभी की नजर कुर्सी पर रहती है। हर कोई नेता हीं बनना चाहता है।

समाज की जिस साधारण रूपरेखा पर बहस की गई है वह बहुत कुछ वैसी हीं है जैसी वैज्ञानिक समाजवाद की लेकिन उसमें ऐसी बातें भी हैं जिनका विरोध या प्रतिवाद आवश्यक है या यूँ कहा जाये कि उनमे सुधार आवश्यक है। हलांकि बोल्शेविक क्रांति के दौरान बोल्शेविकों को भी यह स्वीकार करना पड़ा था कि दिमागी काम उतना हीं उत्पादक श्रम है, जितना कि शारीरिक श्रम और

आनेवाले समाज में जब विभिन्न तत्वों के आपसी संबंधो का समायोजन समानता के आधार पर होगाा तो उत्पादक और वितरक दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण मानें जायेंगे। समाजवादी समाज में इतने हीं अंतर की आशा की जाती है कि दिमागी काम करने वाला शारीरिक काम करने वाले से ऊँचा नहीं माना जायेगा। भगत सिंह भारत में रूसी पद्धति के हिमायती थे, किन्तु लालाजी रूस के समाजवाद को तो स्वीकार करते थे पर कम्युनिष्ट पार्टी के अधिनायकत्व के प्रबल विरोधी थे।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हम इसे पढ़े, इसकी आलोचना करें, इस पर सोचे और इसकी सहायता से स्वयं अपनी समझदारी बनायें। कुल मिलाकर इन सबका निचोड़ होगा समाजवादी समाज की स्थापना। शहीदे आजम भगत सिंह समाजवादी समाज की स्थापना को अपने जीवन का उद्देश्य बना लिये थे। लालाजी का मुख्य उद्देश्य देश की आजादी था तो भगत सिंह का मुख्य उद्देश्य आजादी के साथ समाजवादी समाज की स्थापना था।

संदर्भ सूची :–

1. डा0 भगवान सिंह राणा, डायमंड बुक्स, आदर्श प्रिंटर्स, शहादरा, दिल्ली।
2. भूपेन्द्र हुजा, ए मारटियर्स नोटबुक।
3. आधुनिक भारत के निर्माता, लाला लाजपत राय, मानव संसाधन विभाग, दिल्ली।
4. राजेन्द्र पटोरिया, 50 क्रांतिकारी, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली।
5. मोहम्मद फरीश मंसूरी, पंजाब केशरी लाला लाजपत राय, पूर्वोक्त,नई दिल्ली।
6. लाला लाजपत राय, साउथ अफ्रीका में आर्य समाज, अलका पब्लिकेशन्स।

*****